यात्रा आधारित हिंदी सिनेमा और घुमक्कड़शास्त्र

ध्रुव कुमार*
dhruvyadavv.dy@gmail.com

यात्रा मनुष्य के लिए उपयोगी है। यात्रा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास संभव है। यात्रा से कोई भी मनुष्य अपने ज्ञान क्षेत्र में विस्तार करता है और एक बुद्धिजीवी बनने की दिशा में अग्रसर होता है। शिक्षा के सभी अनुशासनों का लक्ष्य भी मनुष्य को प्रज्ञावान बनाना है। प्रज्ञावान होने की दिशा में सीखने की प्रक्रिया का पहला चरण सूचना है। सूचना प्राप्त करने के, पुस्तकों से लेकर फ़िल्मों तक अनेक माध्यम हैं। फ़िल्में सूचना प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं, क्योंकि फ़िल्में समाज का ही प्रतिबिंब हैं। फ़िल्मों, पुस्तकों आदि के माध्यमों से प्राप्त सूचनाओं का संग्रह ही 'ज्ञान' कहलाता है और इसी ज्ञान का प्रयोग करने की क्षमता 'बुद्धिमता' अथवा 'प्रज्ञा' है। इसी प्रकार यात्रा भी हमें बुद्धिमता की ओर ले जाती है। यात्रा के द्वारा हम पढ़ी हुई अथवा सुनी हुई सूचनाओं का वास्तविक अनुभव कर पाते हैं। हिंदी सिनेमा में अनेक फ़िल्में (ये जवानी है दीवानी, ज़िंदगी ना मिलेगी दोबारा, क्वीन आदि) और गीत ऐसे हैं जो यात्रा पर आधारित हैं। उन फ़िल्मों और गीतों में यात्रा के महत्व को बताया गया है। इसके साथ ही उन फ़िल्मों में यात्रा में आए स्थानों के विवरण भी आए हैं। स्वदेश यात्रा हो अथवा विदेश यात्रा सभी पर आधारित फ़िल्मों में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न स्वतंत्रता का है। अपने जीवन के सपनों को पूरा करने के लिए उन फ़िल्मों के पात्र बिना किसी बाधा के घूमना और भटकना चाहते हैं। वे अपने जीवन को संपूर्ण रूप से जीना चाहते हैं।

यात्रा के महत्व को समझने के लिए साहित्य भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हिंदी साहित्य की एक स्वतंत्र विधा यात्रा-वृत्तांत है। जब कोई लेखक अथवा विचारक किसी स्थान की यात्रा करता है, तो वह अपने अनुभवों को लिख कर सुरक्षित कर लेता है और बाद में उसे पुस्तकाकार देता है, जिसे यात्रा-वृत्तांत कहा जाता है। वृत्तांत का अर्थ वृत्त के अंत से है अर्थात् लेखक जिस स्थान से चला था उसी स्थान पर पुनः वापस पहुँचकर एक वृत्त को पूरा करता है। हिंदी में यात्रा-लेखन की परंपरा बहुत प्राचीन है। इसकी शुरुआत तो आधुनिक काल के आरम्भ में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ही कर दी थी, किंतु इसे एक विधा के रूप में स्थान दिलाने में राहुल सांकृत्यायन का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अनेक स्थानों की यात्राएँ कीं और उनसे संबंधित पुस्तकें लिखीं। उन्होंने यात्रा और यात्रा-साहित्य को व्यवस्थित रूप देने लिए 'घुमक्कड़शास्त्र' की भी रचना की। राहुल सांकृत्यायन का 'घुमक्कड़शास्त्र' यात्रा करने वालों का 'घोषणा-पत्र' है। उनकी इस पुस्तक में यात्रा के महत्व को रेखांकित करते हुए घुमक्कड़ी के नियम तय किए गए हैं। वे यात्रा पर जाने से पूर्व की तैयारियों का भी इस पुस्तक में विस्तार से वर्णन करते हैं। उनके घुमक्कड़शास्त्र की अनेक उक्तियाँ, घुमक्कड़ फ़िल्मों के संवादों से मेल खाती हैं। साहित्य और सिनेमा एक-दूसरे के पूरक हैं। कई बार साहित्य और सिनेमा दोनों की रचना एक ही लक्ष्य को ध्यान में रखकर की जाती है।

---

* **पी-एच. डी. शोधार्थी, हिंदी साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा**

हिंदी सिनेमा में कई फ़िल्में इस उद्देश्य को ध्यान में रख कर बनाई गयीं। 2013 में 'अयान मुखर्जी' की फ़िल्म 'ये जवानी है दीवानी' एक ऐसे व्यक्ति (बनी) की कहानी है, जिसका सपना पूरी दुनिया घूमना है और वह विवाह के बंधन में विश्वास नहीं रखता। फ़िल्म के एक संवाद से उसके सपने का पता चलता है -

"मैं दुनिया का कोना-कोना देखना चाहता हूँ नैना।"

"पूरी ज़िंदगी निकल जाएगी यह सब करने में। बाकी सब कब करोगे ?"

"बाकी सब क्या ? बाईस तक पढ़ाई पच्चीस पे नौकरी, छबीस पे छोकरी, तीस पे बच्चे, साठ पर रिटायरमेंट और फिर मौत का इंतज़ार। धत्त..ऐसी घिसी पिटी लाइफ थोड़े ही जीना चाहता हूँ।"

"तो फिर तुम क्या चाहते हो लाइफ़ से बनी?"

"रफ़्तार, पागलपन, हर दिन इतना धमाकेदार हो कि मुझे अपनी दिल की धड़कने अपने कानों तक सुनाई दें। मैं उड़ना चाहता हूँ नैना, दौड़ना चाहता हूँ गिरना भी चाहता हूँ बस रुकना नहीं चाहता।"[1]

राहुल सांकृत्यायन भी विवाह को घुमक्कड़ी के पंथ की बाधा मानते हैं। उनके अनुसार प्रथम श्रेणी का घुमक्कड़ तो विवाह ही नहीं करता किंतु कुछ किशोर-किशोरियाँ ऐसे भी हैं, जिनमें जब तक घुमक्कड़ी के संकल्प की समझ विकसित होती है तब तक उनका विवाह कर दिया जाता है। राहुल जी ऐसे विवाह को अस्वीकार करने के लिए कहते हैं - "कभी-कभी ऐसा भी देखने में आएगा, कि 15-16 वर्ष का घुमक्कड़ जब अपने पथ पर पैर रखना चाहता है, तो उसके पैर में किसी लड़की की बेढ़ी बाँध रखी गई होती है। ऐसी गैरकानूनी बेढ़ी को तोड़ फेंकने का हरेक को अधिकार है। फिर लोगों का कहना बकवास है -'तुम्हारे चले जाने पर स्त्री क्या करेगी ?' हमारे नए संविधान में 21 वर्ष के बाद आदमी को मत देने का अधिकार माना गया है, अर्थात् 21 वर्ष से पहले तक अपने भले-बुरे की बात वह नहीं समझता, न अपनी जिम्मेवारी को ठीक से पहचान सकता है। ऐसे विवाह को न्याय और बुद्धि गैरकानूनी मानती है। तरुण या तरुणी को ऐसे बंधन की जरा भी परवाह नहीं करनी चाहिए।"[2] साथ ही उनका विचार है कि पत्नी के प्रेम में पड़ा घुमक्कड़ बाधा में पड़ सकता है - "पत्नी से प्रेम रहने पर दुविधा में पड़े घुमक्कड़ तरुण के मन में ख्याल आ सकता है- अखंड ब्रह्मचर्य के द्वारा सूर्यमंडल भेदकर ब्रह्मलोक जीतने का मेरा मंसूबा नहीं, फिर ऐसी प्रिया पत्नी को छोड़ने का क्या फ़ायदा।"[3] 'ये जवानी है दीवानी' का 'बनी' भी प्रथम श्रेणी का घुमक्कड़ है, जिसके लिए रफ़्तार और पागलपन ही सबकुछ है। राहुल जी के शब्दों में यह रोग जिसे लग जाता है फिर जीवन भर उससे दूर नहीं होता - "घुमक्कड़ी का रोग तपेदिक के रोग से कम नहीं है, वह जीवन के साथ ही जाता है, वहाँ किसी को अवकाश या पेंशन नहीं मिलती।"[4]

यात्रा-साहित्य में किसी स्थान की संस्कृति का विशेष महत्व होता है। वहाँ के रहन-सहन, वेश-भूषा, ख़ान-पान और रीति-रिवाज से लेखक पाठकों का परिचय करता है। यात्रा-लेखक यात्रा में आई हर चीज़ को इस तरह देखता-परखता है कि वह दूसरे देशभाइयों के लिए उसे सुरक्षित कर सके, जो सांस्कृतिक विविधता और एकता का बोध कराती हो। घुमक्कड़शास्त्र के अनुसार-"आज जिस प्रकार के घुमक्कड़ों की दुनिया को आवश्यकता है, उन्हें अपनी यात्रा केवल 'स्वांतः सुखाय' नहीं करनी है। उन्हें हरेक चीज़ इस दृष्टि से देखनी है, जिससे कि घर बैठे रहने वाले दूसरे लाखों व्यक्तियों के लिए वह आँख बन सके।"[5]

'ये जवानी है दीवानी' के निर्माताओं ने पहाड़ी संस्कृति में लड़कियों की कम उम्र में शादी की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट किया है -

"देख ना कितनी सुंदर दुल्हन है यह"
"वैसे एक बच्ची है वह"
………………………..
"स्मॉल टाउंस में न ऐसे ही होता है। स्कूल खत्म नहीं हुआ कि शादी करवा देते हैं ?"[6]
इस फ़िल्म का उद्देश्य 'अमिताभ भट्टाचार्य' द्वारा लिखे इस गीत से स्पष्ट हो जाता है -
"कल पे सवाल है जीना फिलहाल है
खाना बदोशियों पे ना जाने क्यूँ
इलाही मेरा जी आए।
शामें मलंग सी रातें सुरंग सी
बागी उड़ान पे ही ना जाने क्यूँ
इलाही मेरा जी आए।"[7]

गीत में 'बनी' का चित्त जिस घुमक्कड़ी रस को चखने के लिए व्याकुल है, उसके विषय में राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं - "घुमक्कड़ी एक रस है, जो काव्य के रस से किसी तरह भी कम नहीं है। कठिन मार्गों को तय करने के बाद नये स्थानों में पहुँचने पर हृदय में जो भावोद्रेक पैदा होता है, वह एक अनुपम चीज़ है। उसे कविता के रस से हम तुलना कर सकते हैं, और यदि कोई ब्रह्म पर विश्वास रखता हो, तो वह उसे ब्रह्म-रस समझेगा।"[8]

एक और हिंदी फ़िल्म जो घुमक्कड़ी के महत्व को बताती है, वह 'जोया अख़्तर' की 'ज़िंदगी ना मिलेगी दोबारा' है। इस फ़िल्म का शीर्षक राहुल सांकृत्यायन के गुरु कपोतराज की प्रसिद्ध पंक्तियों से मेल खाता है -

"सैर कर दुनिया की गाफ़िल, ज़िंदगानी फिर कहाँ ?

ज़िंदगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ ?"[9]

यह फ़िल्म कुछ दोस्तों की 'बैचलर रोड ट्रिप' की कहानी है। जो यूरोप में घूमते और साहसिक कार्य करते दिखाए गए हैं। इस फ़िल्म के संवादों को फरहान अख़्तर के द्वारा लिखा गया है, साथ ही उन्होंने इसमें अभिनय भी किया है। फ़िल्म का एक स्वगत-कथन यात्रा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है -

"पिघले नीलम सा बहता हुआ ये समाँ
नीली नीली सी खामोशियाँ
न कहीं है ज़मी न कहीं आसमाँ
सरसराती हुई टहनियाँ, पत्तियाँ
कह रही हैं कि बस एक तुम हो यहाँ
सिर्फ मैं हूँ मेरी साँसे हैं और मेरी धड़कनें
ऐसी गहराइयाँ, ऐसी तनहाइयाँ, और मैं सिर्फ मैं
अपने होने पे मुझको यकीन आ गया"[10]

इस स्वगत कथन का संकेत 'सोलो ट्रैवलिंग' के माध्यम से स्वयं को और अधिक जानने से है। प्रकृति की गोद में मनुष्य को अपने अस्तित्व का ज्ञान होता है। प्रकृति मानव की सहचरी है, किंतु प्रकृति के सानिध्य में आत्म का ज्ञान तभी संभव है, जब उसके बीच हमारी अकेली उपस्थिति हो। इसके लिए घुमक्कड़ी का एक नियम यह निर्धारित है कि घुमक्कड़ को किसी के साथ नहीं बल्कि अकेले यात्रा करनी चाहिए -"'एको चरे खग्ग विसाण कप्पो' (गैंडे के सींग की तरह अकेले विचरे), घुमक्कड़ के सामने यही मोटो होना चाहिए।"[11]

फ़िल्म का एक गीत जो 'जावेद अख़्तर' द्वारा लिखा गया है, नए-नए शहरों को खोजने और अजनबियों में घुल-मिल जाने को प्रेरित करता है-

"चलो ना, ढूढ़ें शहर एक नया
जहाँ मुस्कुराहटें हैं बिखरीं
जहाँ से ग़म का मौसम गया
जहाँ मीठी बातें हर एक अजनबी से हों
भूलें हम भी जो सारी फ़िकरें
लम्हा-लम्हा खुशियाँ बिखरें
इधर उधर और यहाँ वहाँ
जाए वहीं दिल कहे जहाँ
....
खुली हवा हो खुला समाँ
जागे हुए हों सब अरमाँ"[12]

अजनबियों में घुल-मिल जाने के लिए यात्रिक में आत्मीयता का भाव होना आवश्यक है। अजनबियों में आत्मीयता स्थापित करने के जो साधन हो सकते हैं, उनके विषय में घुमक्कड़शास्त्र में लिखा है -"घुमक्कड़ को पहली बात जो ध्यान रखनी है, वह है समानता का भाव- अर्थात् उन लोगों में समान रूप से घुल-मिल जाने का प्रयत्न करना।....नृत्य और वाद्य यह दो चीज़ें ऐसे हैं, जो सबसे जल्दी घुमक्कड़ को आत्मीय बना सकती हैं।"[13]

60 वें फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार में 'सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म' का पुरस्कार जीतने वाली 'विकास बहल' की फ़िल्म 'क्वीन' में हम जब इसकी अभिनेत्री 'कंगना रनौत' को यूरोप में स्वतंत्र विचरते देखते हैं तो स्वतः ही 'अनुराधा बेनीवाल' के यात्रा-वृत्तांत 'आज़ादी मेरा ब्रांड' का स्मरण हो आता है। यह यात्रा-वृत्तांत हरियाणा से आने वाली एक लड़की के यूरोप में घूमने की कहानी बयान करता है। राहुल सांकृत्यायन के घुमक्कड़-पंथ में भी स्त्रियों के लिए विशिष्ट स्थान हैं। उनके घुमक्कड़-धर्म में किसी के लिए मनाही नहीं है। उनके अनुसार स्त्री को साहसहीन मानना उचित नहीं है, घुमक्कड़ी पर स्त्री को पुरुष के समान अधिकार है। वे स्त्रियों की बेड़ियों को तोड़ने के लिए घुमक्कड़ी को एक महत्वपूर्ण हथियार मानते हैं- "स्त्रियों को घुमक्कड़ी के लिए प्रोत्साहित करने पर कितने ही भाई मुझसे नाराज़ होंगे, और इस पथ की पथिका तरुणियों से तो और भी। लेकिन जो तरुणी मनस्विनी और कार्यार्थिनी है, वह इसकी परवाह नहीं करेगी, यह मुझे विश्वास है। उसे उन पीले पत्तों की बकवाद पर ध्यान नहीं देना चाहिए। जिन नारियों ने आँगन की क़ैद छोड़कर घर से बाहर पैर रखा है, अब उन्हें बाहर विश्व में निकलना है। स्त्रियों ने पहले पहल जब घूँघट छोड़ा तो क्या कम हल्ला मचा था, और उन पर क्या

कम लांछन लगाए गए थे ? लेकिन हमारी आधुनिक-पंचकन्याओं ने दिखला दिया कि साहस करने वाला सफल होता है, और सफल होने वाले के सामने सभी सिर झुकाते हैं।.... बड़ा निश्चय करने से पहले वह इस बात को समझ लें, कि स्त्री का काम केवल बच्चे पैदा करना नहीं है। फिर उनके रास्ते की बहुत कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं।"[14]

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक फ़िल्मकार सिर्फ़ कहानी ही नहीं सुनाता बल्कि वह अपने समाज और समय की अभिव्यक्ति भी करता है। फ़िल्मों का निर्माण दर्शकों के लिए कला की मनोरंजक प्रस्तुति से अधिक कभी-कभी फिल्मकारों के द्वारा अपनी सांस्कृतिक जड़ो को तलाशने के लिए किया जाता है। अतः सिनेमा वास्तिविकता का सौंदर्यपूर्ण चित्रण है। साहित्य और सिनेमा का अंतर्संबंध हमें इस बात में दिखता है कि जितने भी विमर्श हम साहित्य में देखते हैं, वे सभी विमर्श हम सिनेमा में भी देख सकते हैं। साहित्य के चिंतक, लेखक और आलोचक सिनेमा को साहित्य का हिस्सा मानने से हमेशा हिचकते रहे हैं। यह जानते हुए भी कि सिनेमा का आरंभ ही साहित्य से होता है। साहित्य और सिनेमा कहीं न कहीं एक दूसरे के विस्तार में सहयोग करते रहे हैं। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि साहित्य और सिनेमा एक-दूसरे के पूरक हैं। यात्रा एक ऐसा विषय है जिसमें इन दोनों के अंतर्संबंधों को खोजने की अनेक संभावनाएँ हैं। हिंदी सिनेना में अनेक फिल्में, जैसे- 'ज़िंदगी ना मिलेगी दोबारा', 'ये जवानी है दीवानी', ''क्वीन', 'कारवाँ', 'तमाशा', 'जब वी मेट', 'चलो दिल्ली'आदि की पृष्ठभूमि यात्रा पर आधारित है, वहीं हिंदी साहित्य में आज विपुल मात्रा में यात्रा आधारित रचनाएँ लिखी जा रही हैं। अतः इन दोनों माध्यमों के अंतर्संबंध जानने में यात्रा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ :-

1. मुखर्जी, अयान. (2013). *ये जवान है दीवानी* [फ़िल्म].धर्मा प्रोडक्शंस. (00:58:04)
2. सांकृत्यायन, राहुल. (1949). *घुमक्कड़शास्त्र*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 20
3. वही, पृ. 21
4. वही, पृ. 33
5. वही, पृ. 113
6. मुखर्जी, अयान. (2013). *ये जवान है दीवानी* [फ़िल्म]. धर्मा प्रोडक्शंस. (00:32:56)
7. मुखर्जी, अयान. (2013). *ये जवान है दीवानी* [फ़िल्म]. धर्मा प्रोडक्शंस. (01:15:10)
8. सांकृत्यायन, राहुल. (1949). *घुमक्कड़शास्त्र*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 39
9. वही, पृ. 11
10. अख़्तर, जोया.(2011). *ज़िंदगी ना मिलेगी दोबारा* [फ़िल्म]. एक्सेल एंटरटेनमेंट. (00:49:48)
11. सांकृत्यायन, राहुल. (1949). *घुमक्कड़शास्त्र*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 90
12. अख़्तर,जोया.(2011). *ज़िंदगी ना मिलेगी दोबारा* [फ़िल्म]. एक्सेल एंटरटेनमेंट. (00:12:28)
13. सांकृत्यायन, राहुल. (1949). *घुमक्कड़शास्त्र*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 67
14. वही, पृ. 90-91